बन्द

कल रात ही मैं इस शहर में पहुंचा था। मेरे लिए पहले से ही गेस्ट हाउस का इन्तजाम करके रखा गया था। गेस्ट हाउस शहर के बीच से गुजरती सड़क के किनारे था। इस सड़क के दोनों ओर ही यहां व्यवसाय चलता है। सुबह जल्दी काम पर निकलने के लिए मैं रात में आते ही तुरन्त थोड़ा खाना खाकर सो गया। सुबह - सुबह जब मैं उठकर बाहर जाने लगा तो रिसेप्शन पर बैठी महिला ने मीठी आवाज में कहा - "बाहर मत निकलिये, सर" !

मेरे कोई और प्रश्न करने से पहले ही वह बोल पड़ी - "सर, आज शहर बन्द है। कुछ लोगों ने अपनी मांग के लिए शहर बन्द की घोषणा की है।" मैं असमंजस की स्थिति में कुछ देर वहीं पर खड़ा रह गया। तभी रिसेप्शनिस्ट की दूसरी आवाज कि "सर, आप कमरे में आराम कीजिएगा" ने मुझे चौंका दिया। मैं बारह सौ किलोमीटर दूर से बहुत कठिनाई से समय निकालकर यहां का कार्य देखने व कुछ सुझाव देने आया था। यहां तथा वहां का कार्य एवं आकस्मिक बन्द की घोषणा मेरे दिमाग मे उथल पुथल मचाने लगी। मैं लाचार सा कमरे में पड़ी आराम कुर्सी पर लेट गया। ऊपर की जेब से सिगरेट की डिब्बी निकाली और एक सिगरेट सुलगा कर गहरे गहरे कश लेने लगा। जनवरी की सर्द सुबह में भी मेरे चेहरे पर पसीने की बूंद छलक उठी। मैं मरे मन से उठा, कमरे की खिड़की खोल दी तथा परदा उठाकर उसी के पास कुर्सी खींच कर बैठ गया। बाहर सड़क पर यातायात बिलकुल बंद था। इक्का दुक्का लोग पैदल निकल रहे थे। कभी - कभी एक दो औरतो सिर पर मटका रखे पानी लाती दिख जाती थी। सामने की उन बिल्डिगों के पीछे शायद कुछ झोपड़ियां थीं, जहां से यह औरतें पानी लेने लगभग दो सौ फर्लांग दूर म्युनिस्पिल्टी के नल पर जा रहीं थीं। इधर सामने ही कुछ दूर पर एक भवन का निर्माण कार्य चल रहा था। मजदूर बन्द के दौरान पैदल चल कर वहां आ गये थे। सड़क पर कुछ कुत्ते पूरे जोर से एक दूसरे पर झपट रहे थे। आज उन्हे सारे कोलाहल से दूर यह सड़क खाली जो मिली थी। तभी मेरे कानों में जिन्दाबाद - जिन्दाबाद की धीमी आवाजें पड़ी। धीरे-धीरे यह आवाजें तेज होने लगी। एक बड़ा झुण्ड झण्डे लिए इसी ओर आ रहा था। उनके नारे जो कुछ समय पहले अस्पष्ट थे, अब बिल्कुल साफ सुनायी दे रहे थे।

गरीबों की ओर ध्यान दो।
हमें सही मजदूरी दो।
हमें भी जीने का अधिकार है।
गरीबों की, मजदूरों की एकता जिन्दाबाद।

वहां से गुजरते हुए दो-चार लोगो ने उस भवन की ओर इशारा किया, जहां निर्माण कार्य चल रहा था। पूरा झुण्ड जिन्दाबाद के नारे लगाता, पानी भरकर लाती औरतों को ठेहलता हुआ, उस ओर बढ़ गया। झण्डे जो अब लाठी का कार्य कर रहे थे काम करते उन गरीब मजदूरों पर बरसने लगें। पुलिस आयी, न जाने कितने लोग पकड़े गये, कितने घायल हुए और मरे। उधर उस झुण्ड का नेता व उसके चमचे इशारा करके चुपके से इस गेस्ट हाउस में एक कमरा बुक करा कर अन्दर आ गये थे। मेरे कमरे के पास वाले कमरे का ताला खोलते हुए, उनमें से एक आदमी मुस्कराते हुए कह रहा था "सर, कुछ लोगो के मरने से अच्छा हुआ। अब हम वहां एक शहीद चौक का निर्माण करेंगे और आप गरीबों के नेता के रुप में अगला चुनाव अवश्य जीत जायेगें।"

अनिल कुमार लोहानी, "वैज्ञानिक "बी", गंगा मैदानीय क्षेत्रीय केन्द्र, पटना"